

DPN S360

Title: पादस्थापन विधि PĀDASTHĀPANA VIDHI

Run. No. 6051

Cat. No.

Micro. No.

Subject विधि

Religion: Hindu / Bauddha

Language: Skt. / New. / Nep. / Skt. - New. / Maith. - New. / New. - Nep. / *newa direction नेपाल भाषा, विदेश*

Size in cms. 8.5 x 22

Folios 47
3 folios blank
Chapt. / act /

Lines (in a page) 21 vertical writing

Compl. / Incompl.

Author / translator

Scribe / donor Kotirāja Sharmā

Date: NS / SS / VS / KS 785

Ruler / place

Script: New. / Dev. / Bhuj. / Ran. /

Illus.: Monogram, Ritual site diagram
owns of the ms सुदर्शन भाग्य

Material: palmleaf / paper / thyaśaphu /

Condition: fine / damaged by worms, rats, water /

Beginning, colophon, post-colophon:

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
कृष्णं ॥

॥ देवस्थापन भूमौ एकमासद्विमासा

25

15

10

5

0

cms.

5

10

15

20

25



[illegible][illegible]

कतं हिलसईकी सावरुकादि
मलितं ॥ गृहाणमं वलि वरु
न वा मुदा वं युष्मन् ॥ १ ॥
उरु ॥ १ ॥ ३ ॥ अर्थमननिहा
गच्छ वरुतिव चतानियाया
द्योयसनीय आन चंदनाक
नय्य धूप दीप नैवशादि
॥ ३ ॥ अर्थमेनम ॥ ३ ॥ वलि
॥ १ ॥ नमोदिकयु मायुर्न पाय
सावनिर्मलितं अर्थमेन वं
गृहाणमं सर्वदा वं युष्मन्
य ॥ ॥ ३ ॥ उरु ॥ १ ॥ विव
निहागच्छ वरुतिव चतानि
नियायाद्योचसनीय आन चं
दनाकनय्य धूप दीप नैवशा
नैवशादि ॥ ३ ॥ विवस्वतेनम ॥
३ ॥ वलि ॥ १ ॥ चंदनाचिंतना
थ कर्णमातुनमलितं विव
स्वतेन वं गृहाणमं सर्वदा वं
युष्मन् ॥ ३ ॥ ३ ॥ उरु ॥ १ ॥
स्व ॥ मित्र वरुगच्छ वरुगच्छ

तिष्ठ चतानियायाद्योचसनीय
आन चंदनाकनय्य धूप दी
प नैवशानि ॥ ३ ॥ मित्रायनम ॥
३ ॥ वलि ॥ १ ॥ मनुजं पायसनि
धय्यादिसममलितं गृहा
नमं वलि वरु मित्रायनम ॥
यच्छम ॥ ३ ॥ ३ ॥ उरु ॥ १ ॥
महाधन वरुगच्छ चतानिया
याद्योचसनीय आन चंदना
कनय्य धूप दीप नैवशानि
॥ ३ ॥ महाधनयनम ॥ ३ ॥ वलि
॥ १ ॥ साक्षादने सावित्रं न
आदि कीनमं युर्न गृहाणमं
महाधनं सर्वदा वं युष्मन्
नय ॥ ३ ॥ ३ ॥ उरु ॥ १ ॥ सावि
वरुगच्छ वरुगच्छ चतानि
याद्योचसनीय आन चंद
नाकनय्य धूप दीप नैवशा
निसावित्राय नमानम ॥ ॥
गृहा ॥ ३ ॥ सावित्रायनम ॥ ३ ॥
लि ॥ ॥ यथादिकु गायत्रीय क
र्णमातुनमलितं सावित्रं

25

[illegible]

5

0 cms. 5 10 15 20 25 30

समिसयुतसयकं गंधयथा
 दिसेयु न । गृहा (ल) मं वलि
 नृदजयस्यतियुयकम ॥ ११ ॥
 उं कुरुवः स्वः आयः ॐ हागच्छ
 ॐ हातिष्ठ नतानियाशो योच
 मनीयस्मानवन्दनाकृतयथा
 धृयदीयनेवशानि आययन
 मः ॥ ३ ॥ पूजा ॥ उं आययन
 मः ॥ ३ ॥ वलि ॥ की प्रखण्ड
 संयुक्तयथा दिदिः स्याजि
 न । गृहा (ल) मं वलि दृश्ये आ
 ययनियुयकम ॥ १२ ॥
 उं कुरुवः स्वः आयवत्सु ॐ
 हागच्छ ॐ हातिष्ठ नतानिया
 शो योचमनीयस्मानवन्दना
 कृतयथा धृयदीयनेवशानि
 आयवत्सायनमः ॥ ३ ॥ पू
 जा ॥ उं आयवत्सायनमः ॥
 ॥ वलि ॥ दक्षिणमुत्तरी
 नक्षत्रादि सुसमाप्ति । गृहा (ल)
 मं वलि वत्स विद्युमकुविना

गतं ॥ १३ ॥
 उं कुरुवः स्वः ॐ हागच्छ ॐ
 हातिष्ठ नतानियाशो योचमनी
 यस्मानवन्दनाकृतयथा धृयदी
 यनेवशानिसर्वे नमः ॥ ॥
 पूजा ॥ उं सर्वे नमः ॥ व
 लि ॥ ॥ दक्षिणसंयुक्तय
 कं गंधयथा दिसेयु न । गृहा
 (ल) मं वलि सर्वे जयस्यतियु
 यकम ॥ १४ ॥

उं कुरुवः स्वः ॐ हागच्छ ॐ
 हातिष्ठ नतानियाशो वसन्तीय
 स्मानवन्दनाकृतयथा धृयदीय
 नेवशानि मुहुरन्मः ॥ ॥
 पूजा ॥ उं मुहुरन्मः ॥ वलि
 ॥ समिसयुतसयकं सायन
 कापदिदि न । गृहा (ल) मं वलि
 कृतयथा धृयदीयनेवशानि १५

उं कुरुवः स्वः ॐ हागच्छ ॐ

ॐ ह्रस्ववक्ष्वापिलिपिद्वन्द्वं
नमः ॐ ह्रस्ववक्ष्वापिलिपिद्वन्द्वं
वसनीयं श्रानचन्दनाकत

[illegible]

संयुतं । विद्याप्रकृष्टं । लम्
नकाविद्युविनामथ ॥ २० ॥

ॐ ह्रुवः ॥ सवृक्षं नावृक्षं
ह्रुवः ॥ ह्रुवः ॥ पतानियाशोचस
नीयस्मान्त्वं दनाकृतयुष्य
ध्रुवदीयनेव शानि युतना
यनमः ॥ ॥ वृजः ॥ ॐ युत
नायनमः ॥ ३ ॥ वलिः ॥ मीत
वक्रादि संयुक्तं । वक्रगंधादि
युतिर् । वृक्षः । लम् । वलिः युत
नं । रकाविद्युविनामथ ॥ २१ ॥

ॐ ह्रुवः ॥ सवृक्षं नावृक्षं
ह्रुवः ॥ ह्रुवः ॥ पतानियाशो
चसनीयस्मान्त्वं दनाकृतयु
ष्यध्रुवदीयनेव शानि ॥ ॥ लम्
नायनमः ॥ ३ ॥ वृजः ॥ ॐ वृ
क्षः । लम् । वलिः ॥
सवृक्षं नावृक्षं । वक्रगंधादि
युतिर् । वृक्षः । लम् । वलिः

लिं । ली । वामुदायायुप्रकं

ॐ ह्रुवः ॥ सवृक्षं नावृक्षं
ह्रुवः ॥ ह्रुवः ॥ पतानियाशोचस
नीयस्मान्त्वं दनाकृतयुष्य
ध्रुवदीयनेव शानि । यथे न्याय
नमः ॥ ३ ॥ वृजः ॥ ॐ यथे न्या
यनमः ॥ ३ ॥ वलिः ॥ उत्त
र्त्वाययथे न्याय । वक्रादिक
संयुक्तिर् । वृक्षः । लम् । वलिः
ह्रुवः । यथे न्यायनमानमः ॥
॥ २२ ॥ ॥ ॥ ॥

ॐ ह्रुवः ॥ सवृक्षं नावृक्षं
ह्रुवः ॥ ह्रुवः ॥ पतानियाशो
चसनीयस्मान्त्वं दनाकृतयु
ष्यध्रुवदीयनेव शानि । ज
यकायनमः ॥ ॥ वृजः ॥
ॐ जयकायनमः ॥ ३ ॥ वलिः
॥ ॥ वक्रगंधादि । वृक्षः । लम्
वलिः ह्रुवः । जयकायनमानमः

॥ १७ ॥ ॐ ह्रुं वः ॥
 तुं ह्रुं वः ॥ तुं ह्रुं वः ॥ तुं ह्रुं वः ॥
 निपाया वसनीयस्मानुर्वद
 नाकतयस्वधूपदीयनेवशा
 निहृन्नायनमः ॥ ॥ यूजा
 ॥ ॐ ह्रुं वः ॥ वलि ॥ सि
 तमन्त्रं तथाप्यसि कृत्वा दिस
 मीवेत ॥ गृहा ॥ वलि ॥ दृश्यं
 त्वराजन्ममो मुने ॥ १० ॥
 ॐ ह्रुं वः ॥ गृहा ॥ वलि ॥
 गृहा ॥ वलि ॥ निपाया
 वसनीयस्मानुर्वदनाक
 तयस्वधूपदीयनेवशा
 निहृन्नायनमः ॥ ३ ॥ यूजा ॥
 ॐ ह्रुं वः ॥ वलि ॥
 वलि ॥ प्रकृष्य युगं लकीर
 कागीषादिरियते ॥ गृहा ॥
 मीवेत ॥ दृश्यं ॥ लोकात्तत्त्वम
 मा मुने ॥ १७ ॥
 ॐ ह्रुं वः ॥ सश ॥ वः ॥

तुं ह्रुं वः ॥ निपाया वसनीयस्मानुर्वदनाक
 तयस्वधूपदीयनेवशा
 निहृन्नायनमः ॥ ॥ यूजा ॥
 ॐ ह्रुं वः ॥ वलि ॥
 वलि ॥ विष्णुर्मधुमव
 र्गं गन्तादिकम् ॥ वलि ॥
 प्रकृष्य युगं लकीर
 कागीषादिरियते ॥ गृहा ॥
 मीवेत ॥ दृश्यं ॥ लोकात्तत्त्वम
 मा मुने ॥ १७ ॥
 ॐ ह्रुं वः ॥ सश ॥ वः ॥
 तुं ह्रुं वः ॥ निपाया वसनीयस्मानुर्वदनाक
 तयस्वधूपदीयनेवशा
 निहृन्नायनमः ॥ ३ ॥ यूजा ॥
 ॐ ह्रुं वः ॥ वलि ॥
 वलि ॥ विष्णुर्मधुमव
 र्गं गन्तादिकम् ॥ वलि ॥
 प्रकृष्य युगं लकीर
 कागीषादिरियते ॥ गृहा ॥
 मीवेत ॥ दृश्यं ॥ लोकात्तत्त्वम
 मा मुने ॥ १७ ॥
 ॐ ह्रुं वः ॥ सश ॥ वः ॥

25

15

10

5

0

Cms.

5

10

15

20

25

प्राणि आत्मयनमः ॥ ३ ॥
 पूजा ॥ ॐ आत्मयनमः ॥ ३ ॥
 बलिः ॥ ॐ दंड ॥ ॐ रीसा नमः
 नैवशादि मूर्ति यतः । गृहात्
 मवलिह्यं रामभाक्तियु
 क्तम् ॥ २१ ॥ ॐ ह्रु
 वः ॥ ॐ गृहात् ॥ ॐ गृहात् ॥
 हातिह्यं चानियोद्याचमनी
 यस्मान्चयनाकृतयुधुय
 दीयनेवशानिष्ठा । नयेनमः
 ॥ ३ ॥ पूजा ॥ ॐ आत्मयन
 मः ॥ ३ ॥ बलिः ॥ सर्वेषु विधि
 कथाथ वसुगं भादिर्युतः ।
 घृणावितं गृहात् ॥ मः सक
 जिह्न नमः ॥ ॥
 २२ ॥ ॐ ह्रु वः ॥ ॐ ह्रु वः ॥
 ॐ गृहात् ॥ ॐ गृहात् ॥
 तानियोद्याचमनी यस्मान्
 चयनाकृतयुधुयदीयने
 वशानि । पूजयेत्तमः ॥
 ३ ॥ पूजा ॥ ॐ ह्रु वः ॥

मः ॥ ३ ॥ बलिः ॥ कीर्तिना
 मसायुक्ती नकृय्यादिसहि
 तः । गृहात् ॥ मः बलिह्यं युय
 दननसायुतः ॥ २४ ॥ ॐ ह्रु
 वः ॥ ॐ विरथ ॥ ॐ गृहात् ॥
 ॐ हातिह्यं चानियोद्याचम
 नीयस्मान्चयनाकृतयुधुय
 धुयदीयनेवशानि विर
 थयनमः ॥ ३ ॥ पूजा ॥
 विरथयनमः ॥ ३ ॥ व
 लिः ॥ दधिर्गं भादिर्यु
 कः । यीतयुधुयसमविर्ग
 बलिर्विरथं गृहात् ॥ विरथ
 कृतयुधुय ॥ १३ ॥ ॥
 ॐ ह्रु वः ॥ ॐ ह्रु वः ॥
 ॐ गृहात् ॥ ॐ गृहात् ॥
 चमनीयस्मान्चयनाकृत
 युधुयदीयनेवशानिय
 सायनमः ॥ ३ ॥ पूजा ॥
 ॐ यसायनमः ॥ ३ ॥ बलिः ॥
 रुक्मिधुयु नकृय्यादि

यत्रिमल्लिनी। गृहलसं वलि
 कथं यमयव नमा मुन ॥
 २० ॥ ॐ ह्रुव १४
 मृगदव वृगगच्छ वृदाति
 वृत्तानियोशा यमनीय
 नवदनाकतय धृय
 दीवने वशानि मृदय वता
 यमस ॥ धृजा ॥ १ ॥ मृदय
 वता यमस ॥ २ ॥ वलि ॥
 यक मा मो दनने वपी क व
 मुदिसल्लिनी। युनिकर गृ
 हा लसं मृदय व नमा मुन
 ॥ २० ॥ ॐ ह्रुव १४
 मृगदव वृगगच्छ वृदाति
 वृत्तानियोशा यमनीय
 नवदनाकतय धृय
 दीवने वशानि मृदय वता
 यमस ॥ १ ॥ धृजा ॥ १ ॥ मृदय
 वता यमस ॥ २ ॥ वलि ॥
 यक मा मो दनने वपी क व
 मुदिसल्लिनी। युनिकर गृ
 हा लसं मृदय व नमा मुन
 ॥ २० ॥ ॐ ह्रुव १४

व मृदया वयम नय ॥
 २० ॥ ॐ ह्रुव १४
 मृगदव वृगगच्छ वृदाति
 वृत्तानियोशा यमनीय
 नवदनाकतय धृय
 दीवने वशानि मृदय वता
 यमस ॥ १ ॥ धृजा ॥ १ ॥ मृदय
 वता यमस ॥ २ ॥ वलि ॥
 यक मा मो दनने वपी क व
 मुदिसल्लिनी। युनिकर गृ
 हा लसं मृदय व नमा मुन
 ॥ २० ॥ ॐ ह्रुव १४
 मृगदव वृगगच्छ वृदाति
 वृत्तानियोशा यमनीय
 नवदनाकतय धृय
 दीवने वशानि मृदय वता
 यमस ॥ १ ॥ धृजा ॥ १ ॥ मृदय
 वता यमस ॥ २ ॥ वलि ॥
 यक मा मो दनने वपी क व
 मुदिसल्लिनी। युनिकर गृ
 हा लसं मृदय व नमा मुन
 ॥ २० ॥ ॐ ह्रुव १४

शानि वृक्षदककायनमः॥
 ॥ वृजा ॥ ॐ वृक्षदककायन
 मः॥ ३ ॥ वलिः॥ कृष्णसूत्र
 सावरुके दृग्गर्भादिसं
 यर्ग। वृक्षदकगृहात्म
 वलिः॥ किंयुयच्छमः॥ ४॥
 ॥ ॐ वृक्षदककायनमः॥
 वृक्षदककायनमः॥ वृक्षदककायन
 निपाद्यावसनीयान् वृक्ष
 नाकनयवृक्षधूपदीपनैव
 शानि अर्चयन्तः॥ ३ ॥
 ॥ वृजा ॥ ॐ वृक्षदककायन
 यनमः॥ ३ ॥ वलिः॥ म
 धूनामदिर्गपिष्टं नक्षत्रं
 यः॥ वलिः॥ वृक्षदककायन
 ननु सर्वदोषयुक्तं नयः॥
 ॥ ४॥ ॥ ॐ वृक्षदककायनमः॥
 वृक्षदककायनमः॥ वृक्षदककायन
 निपाद्यावसनीयान् वृक्ष
 नाकनयवृक्षधूपदीपनैव
 शानि अर्चयन्तः॥ ३ ॥

वृजा ॥ ॐ वृक्षदककायनमः॥ ३ ॥
 वलिः॥ वृक्षदककायनमः॥
 कर्षुनादि समं विना गृहा
 (मं) वलिः॥ वृक्षदककायन
 किंयुयच्छमः॥ ४॥ ॥
 ॐ वृक्षदककायनमः॥
 वृक्षदककायनमः॥ वृक्षदककायन
 निपाद्यावसनीयान् वृक्ष
 नाकनयवृक्षधूपदीपनैव
 शानि अर्चयन्तः॥ ३ ॥
 ॥ वृजा ॥ ॐ वृक्षदककायन
 यनमः॥ ३ ॥ वलिः॥ वृक्ष
 नाकनयवृक्षधूपदीपनैव
 शानि अर्चयन्तः॥ ३ ॥
 ॥ वृजा ॥ ॐ वृक्षदककायन
 यनमः॥ ३ ॥ वलिः॥ वृक्ष
 नाकनयवृक्षधूपदीपनैव
 शानि अर्चयन्तः॥ ३ ॥

शानि अकलाखाय नमः॥
 ॥ यज्ञा ॥ ॐ अकलाखाय न
 मः॥ ३ ॥ वलि ॥ मायाननु
 यनाखकू नययुखादिसं
 यूनं । गृहालमवलिकुश
 मकलाखय नमामुनं ॥ ७१ ॥
 ॥ ॐ ह्रुवः ॥ ४ ॥
 यं ॐ हागद्व ॐ हातिष्ठ
 नानियोशावमनी यस्मान
 र्दनाकृतयुषधुयदीय
 नेव शानि देवय नमः॥
 यज्ञा ॥ ॐ देवय नमः॥ ३ ॥
 ॥ वलि ॥ यालिकामयुसं
 मिर्षं नकर्म आदिसंयूनं
 । गृहालमवलिकुशं दे
 वमार्त नमामुनं ॥ ७२ ॥
 ॐ ह्रुवः ॥ ४ ॥ अदिति ॥ ४ ॥
 हागद्व ॐ हातिष्ठ नानि
 योशावमनी यस्मान र्दना
 काकृतयुषधुयदीय नेव

शानि अदिते नमः॥
 यज्ञा ॥ ॐ अदिते नमः॥ ३ ॥
 ॥ वलि ॥ कीत्रयधुसमाय
 की नाना युजाय ॥ ॥ ॥
 दवसागर्भहालमं सर्व
 दावयुषमय ॥ ७३ ॥
 वद ॥ ॐ शानादुधिवि ॥ ॐ
 वदयुषमं ॥ ॐ वायुष
 मः॥ ॐ वदयुषमं ॥ ॐ
 वदयुषमं ॥ ॥ ॥
 ॐ वायुषमं ॥ ॥ ॥
 नानावायुयार्तजादुति ॥ ७४ ॥
 ॐ वायुयार्तजादुति ॥ ७५ ॥
 ॐ वायुयार्तजादुति ॥ ७६ ॥
 ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
 ॐ वायुयार्तजादुति ॥ ७७ ॥
 ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
 ॐ वायुयार्तजादुति ॥ ७८ ॥
 ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
 ॐ वायुयार्तजादुति ॥ ७९ ॥
 ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

25

15

10

U

ॐ वां वीं वूं वि ध के सो ॥ १ ॥
 दमासनं नमः ॥ यथ्यं नमः ॥
 ध्यानं ॥ द्वि तुर्जवीनददमु
 जगत्प्रतिकुलसनः ॥ वि
 धकस्मिन्गदाणीयां ज्ञान
 मूलादसुखरुतः ॥ ध्यान
 यथ्यं नमः ॥ ॥ वादा
 र्घ्यं ॥ दत्तार्घ्यं ॥ र्चनं ॥ सि
 द्धनं यज्ञायवीर्यं ज्ञानं
 दनं यथ्यं ॥ सत् ॥ ननं यथ्यं

न ॥ ॥ उँ वाँ ह्रदयाय नमः ॥
 ॥ ॐ ह्रदयादिषु नमः ॥
 ॥ वदे ॥ ॐ विश्वकर्मा विम
 नाना आदि ह्रया भागा विम
 ता यत्र मोसदृक । गवां मि
 स्तानि समिवा मदे नीयता
 सकृत्पृथिवीयन एकमादृ ॥
 ॥ ॥ आदृ निविरा ॥ वृ
 ॥ ॐ विश्वकर्मा विम
 ना ॥ प्रव नयु ननु ॥ वृ
 यदीय जा वसा ॥ ॥
 ॐ विश्वकर्मा यग छाति
 र्मसा वृद्धि कारकः ॥ अ
 नकुदा नरुक्तं विश्वकर्
 मा नमः ॥ ॐ ॥ अर्गमा
 दि ॥ ॥ विश्वकर्मा
 हस्तं अर्गमा दकनय
 कर्त ॥ ॥ अर्गमा द
 नन हस्तं स्वर्गमा लिख
 न ॥ स्वर्गमा द ॥ ॥
 ॐ विश्वकर्मा यनमः ॥ ॐ निवार

नमः ॥ ॐ विश्वकर्मा यनमः ॥
 ह्रदयादिषु नमः ॥
 ॐ वाँ ह्रदयादि ॥ ॥ अर्गमा द
 अर्गमा दि ॥ कदा विविग
 न ॥ कदा वि दे नि ॥ समय
 व वा ॥ ॐ नका नीका युनि
 ह्रदवा सो विश्वकर्मा क
 कदा र्गमा दृष्टं नृक नमः ॥
 नमः ॥ ॐ विश्वकर्मा यनमः ॥

विश्वकर्मा वाक्पत्रिखतिगता
 नगता स्वमन यथादिगमा
 र्गमा द ॥ ॥ ॐ स्वर्गमा द
 नयुक्तं स्वमनकर्मा नि
 विश्वकर्मा यर्गमा नमः
 मुक्ता मुक्ता र्गमा ॥ ॐ क
 दा र्गमा द वयि ता वि की नका दि
 सने र्गमा । कर्मा र्गमा दृष्टि वीद
 नी विवृक्ता यनद न व ॥ ॥
 नका र्गमा यजमा नाता मा वा यो
 विश्वकर्मा ना । सर्वेषां मर्ग
 वा मुक्तं नयुक्तं नकर्मा ना ॥ ॥

मममन्त्रे ॥ ॐ ह्रस्वमाय
 ह्रस्व ॥ वाक्मन्त्रे न स्वस्तिवा
 न्मन्त्रे ॥ ॐ ह्रस्वमाय
 मितामन्त्रे न स्वस्तिवा
 नानामन्त्रे न स्वस्तिवा
 वारं खननं मृत्तिको वलि
 निक्षय ॥ नृकं काका
 ध्वं प्रकिया ॥ नृकं काका
 काष्ठ सर्वे क्रियत ॥
 नृकियं खनन ॥ ये जमान
 न खनन स्नान मधु मयि वा
 लययत ॥ ॐ ॥ ॐ ॥

हलाहिक आरथि युक्ता
 नृकालिष कश्यपिष्ठा
 नृकायाथेन यथा विधानेन
 बलिकर्म काययत ॥
 मृत्तिकामन्त्रे वलियं गवा
 प्रयुक्तिया ॥ ॥ संखाद
 तिनाडा दगया न यजमा
 नाचार्यसं आदृति ॥ नृकि
 क ॥ योद्धिक ॥ दग्धयादि ॥

॥ वीहिहाम ॥ दीयवृत्ति
 कृति ॥ वाक्मन्त्रे न स्वस्तिवा
 ॥ वलिविसर्जनं दक्षिण
 दानं ॥ ॥ यूर्ध्व ॥ ॐ ह्र
 वान्मन्त्रे ॥ ॥ आसंसा ॥
 जाय ॥ मधुलसाय ॥ अत
 नृकादि ॥ ॥ यजुसिदा
 सनाकनयजमान स्वकि
 कामने ॥ निर्मन्त्रे वलि ॥
 प्रविषक ॥ र्चयन सिधूर
 सगुल आनीर्वाय ॥
 दृष्टार्थिखा वलिधायसद्धा
 य ॥ ॥ नृका वाथे गाय
 था समयदा नृका ॥ यथा
 वृत्तगोराय ॥ ॥
 नृकितिविषमं यतिष्ठासा
 नृमं गृह ॥ नृमिखननवि
 धिसमाय ॥ ॥ ॥

अथयादस्माय न विधि वक्तु
 वाक्मन्त्रे न स्वस्तिवा
 वलिया न २ यजुर्न ॥ गृह

नामादयः ॥ गणसं व
दुक कं ॥ दशुकादि ॥
गुणिर्गोमादि ॥ वृक्ष आदि
नवात्मा ॥ स्वस्वमकुनवदि
विय ॥ वय ॥ ॐ नमो नार्ता
॥ ॐ नमो वरुणाय ॥ ॐ जू
भूजुभिक ॥ ॐ द्युर्नद्युन
यावान ॥ ॐ विश्वे तं प्रकू ॥
ॐ धार्चोदि ॥ स्वाहा ॥ वृष
दीपजायकाय ॥ ॐ निर्वो
र्गनिर्विकल्प ॥ ॐ धूर्वद
क्षिणयष्टिमात्यादि ॥ अ
र्गनादि ॥ ॥ वलिवि
मर्जनी ॥ द्रुपान्थानसं
द्रुपान्थानसं ॥ यदायकन ॥
रुक्तिवलियुजन ॥ ॥

गणाय नमः पुण्यविश्व ॥ ॥
पंचगवसाधन ॥ दशप्रिय
ऊमातया ॥ यजमान ॥
ॐ अशादि ॥ यजमानस्य
आकृष्टलकासनार्थं ॥ आत्म

नादेन श्रीविष्णुस्य नाथ
यादस्य नाथ ॥ वाक् ॥
युवासाजन वाक् ॥ सम
र्थ ॥ वाक् ॥ वन अशादि
॥ गुननमस्कृत ॥ आसीद्य
याकृष्टजा ॥ आत्मयुजा ॥
वाक् ॥ वन कृष्णिकस्य
य ॥ कनभवन युताकृष्ट
विलाकृष्टि ॥ दृष्ट ॥ ॥

यथाकर्मवत्तम यकृष्टमन
का ॥ ॥ दृष्टवलि कृष्णतवि
य ॥ ॥ गमुकृष्टनय
युर्व ॥ दृष्ट दृष्टवत् ॥ ॐ उ
गलहा युवावीदि ॥ ॥ अ
प्रस ॥ सूर्यकान्ति मित्रल
मनलित ॥ वटदृष्टि का
वीदि ॥ २ ॥ थकलिकानया
॥ दक्षिण ॥ ॐ लुनील ॥ अ
र्गनामाति ॥ यकृष्टन ॥ हा
मल ॥ ३ ॥ नैसृष्ट ॥ सहा
नील का ॥ सुवर्णनाकि

अमुनि मास वीहि ॥ ४ ॥
 यन्मिमांसा भाति आह ॥ या
 श्रीखण्डु एका वीहि ॥ ५ ॥
 वायुय ॥ यथाराग निदि
 या न नित्रि रुकलमि ॥
 लिवावा न द्वा वीहि ॥ ६ ॥
 उक्तमस ॥ यद्यराग का
 लं न धक कूट कूल धक
 नव नाहा वनि वीहि ॥ ७ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 यती नख दूली स्यं क वी
 हि ॥ ८ ॥ श्रीमच्छसु म
 वेत्रत्र सवेभु सवेडा
 यधि सर्वदवा रुटिक
 खर्चसते सवे वीहि वा
 नमग ॥ सुवर्ण नडु य
 थानकि निधाय दूर्वाकत
 सर्व कुरु निधाय ॥ ९ ॥

लखिका लनाग लमे
 डा डायन ॥ लकुम लीग
 लुड लयादका अनकमु

किं ॐ यम मृगयिषु
 व कुमीलिला दलिनी या
 न वेधुनी कमुनी कयून
 (मात्राने श्रीखण्डु ककुम ॥
 निधकुरुयादव ननयन
 ॥ अतयास विवरीत सक्ति
 कवाय ॥ कुरुमीथनैव
 धन ॥ धनदसक्ति कसत
 याव कलग विसामन ॥ वृ
 कन ॥ वद ॥ उवकयकान ॥
 ॐ हृदयिषु ॥ ॐ नमो भगवते
 वा ॥ ॐ सहस्रगीर्वा ॥ ॐ श्री
 शत ॥ ॐ अजिद्यकलर्ण ॥
 ॐ मर्ममर्ग ॥ ॐ नितामिन
 ॥ मेकुरा ॥ १ साहा ॥ ॐ
 निवानामासि ॥ ॐ दधिका
 धा ॥ ॐ नखदाया ॥
 (मातय ॥ मृत्तिका ॥ अश्वका
 कनथ ॥ कवाय ॥ उविष्णु
 नातमसि ॥ यलव ॥ ॐ हृद
 विषु ॥ यथादय ॥ ॐ यथा
 ननयय ॥ कस ॥ ॐ वासि

निधिरुं वद नवृज नं ॥
 ॐ समदं जगत्तिलस्य म
 आमाये नाना रं न विधेना
 ॐ न्दाया वृषका यसाह ज्वा
 या दवी त्रिह सा वयं उ ॥
 ॐ मर्म मर्ग न ॥ ॐ ज्वा जिष्ठ
 कलेम ॥ ॐ यश्च न डो ॥
 ॥ नन्दादि ॐ वृष मर्ग व
 वृज नं ॥ ॥ नन्दा ॥ ॐ
 नादि मर्ग विज्ञान याय
 मर्ग विज्ञान याय
 नन्दादि मर्ग विज्ञान याय
 यश्च न डो ॥ ॐ ज्वा जिष्ठ
 मर्ग विज्ञान याय

[illegible]

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ २ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ३ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ४ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ५ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ६ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ७ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ८ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ९ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १० ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

मायनमः॥ॐ नमः मुनी रगीवा
॥ ॐ ॥ ॐ तिर्यं च विं न निगलना
॥ १०॥ ॥ ० ॥

तत्तयं च गलनसाधनं ॥ ॐ यक्षी
मूर्त्तयं नमः ॥ ॐ यक्षी मूर्त्तयि
यनयं च मयं नमः ॥ ॐ श्याना
विदीना ॥ १ ॥ ॐ आयमूर्त्तयं
नमः ॥ ॐ आयमूर्त्तयि यनयं
नमः ॥ ॐ आयमूर्त्तयि यनयं
॥ २ ॥ ॐ गजमूर्त्तयं नमः ॥
ॐ गजमूर्त्तयि यनयं क्रिया
यं नमः ॥ ॐ गजमूर्त्तयि यनयं
॥ ३ ॥ ॐ वायुमूर्त्तयं नमः ॥ ॐ
वायुमूर्त्तयि यनयं नमः ॥ ॐ
नमः ॥ ॐ गजवायु ॥ ४ ॥
ॐ आकाशमूर्त्तयं नमः ॥ ॐ आ
काशमूर्त्तयि यनयं ॐ चयं न
मः ॥ ॐ निधानमासि ॥ ॥
ॐ तिर्यं च गल विवि ॥ ॥ ॥

ॐ आत्मनवायनमः ॥ ॐ आत्मन
वायनयं च यनमः ॥ ॐ
वयनयनं ॥ १ ॥ ॐ विरा

तत्तयनमः ॥ ॐ विद्यानमः
विद्येनयं विद्येनमः ॥ ॐ ३
आयनमः ॥ २ ॥ ॐ निव
तत्तयनमः ॥ ॐ निवतत्तयि
यनयं च यनमः ॥ ॐ नमः
१०॥ ॐ वायं ॥ २ ॥ निवि
सादि ॐ चयनं ॐ यनयं
क्रमनसं चयनं ॐ यनयं
सं चयनं ॐ चयनं ॐ यनयं
क्रमनं ॥ ॐ चयनं ॥ ॐ
मनाश्चयनं ॥ ॥ ॥

तत्तयि चयनं ॥ ॥
युवादि मुखनसं चयनं
सं चयनं ॥ ॐ विद्येनमः ॥ ॐ
मासं नमः ॥ यनमः ॥ ॐ
सायं चयनं ॐ चयनं ॥
वोनयं चयनं ॥ ॐ चयनं ॥
ॐ विद्येनयं चयनं ॥ ॐ
यनमः ॥ ॐ चयनं ॥ ॐ
यनमः ॥ ॐ चयनं ॥ ॐ
ॐ विद्येनमः ॥ ॐ चयनं ॥
विद्येनमः ॥ ॐ चयनं ॥ ॐ

॥ क। कर्षा विनिस। मेरुस
 ॥ नित्येण सकृदपि प्रोक्तं ॥
 ॥ ॐ विश्वकर्मा नमः सूर्यं ॥
 ॥ लोकसुखिकानका ॥ यथाय
 ॥ प्रथमाया विविधकर्मान
 ॥ मसुगं ॥ अरुगं प्रादि ॥ ॥
 ॥ आइति ॥ ॐ विश्वकर्मा विमना
 ॥ विश्वकर्मा दुर्गमं च दनं
 ॥ न सक्ति कलिखन ॥ खानज
 ॥ कनन ॥ अरुमं तुल ॥ ॐ सुनि
 ॥ विदूर विमर्जन ॥ ॥ धन
 ॥ यजमानं न वधूरी अटपाल
 ॥ वक्राय ॥ दक्षिण वाय ॥ ॐ
 ॥ निशि दुर्गाय दानं ॥ ॐ सु
 ॥ यंचकं सूर्यं विष्णुस्यनेः
 ॥ कर्मानि अथ कुरु लोकाम्य
 ॥ ॥ विश्वकर्मा वाक्
 ॥ यजमान पादस्यपन
 ॥ सुमिगता ॥ ॥ नृणां चार्थ
 ॥ ॐ सुयत्रिमा ॥ ॥ ससुग
 ॥ सुमी वृद्धादिरनयन ॥ ॥
 ॥ अथ पातुलखनकाय ॥ ॐ
 ॥ दुर्गसुय ॥ ॥ ॥

॥ ॐ ॐ हृदयाय नमः
 ॥ समीकन ॥ ॐ हं कवचा
 ॥ ॥ गठन ॥ ॐ दुर्गसुय
 ॥ ॥ ॐ विचरुमं काव ॥ ॥
 ॥ अथ यादि विमर्जन ॥ ॥ युवा
 ॥ दिमयार्क ॥ यीन च ॥ नद
 ॥ किमवर्क ॥ सक्ति कलिख
 ॥ न ॥ नवावी दिहाय ॥ सुव
 ॥ नृजगयद्वानिधाय ॥ ॐ सु
 ॥ युग्मक ॥ यंचकं सूर्यस्य
 ॥ नययन ॥ सक्ति वाक् ॥ य
 ॥ नवाय ॥ ॥ ॐ विदवता
 ॥ गृहस्य ॥ ॥ ॥ ॥
 ॥ यनन वकाय ॥ चरुसं का
 ॥ न सक्ति कलिखन ॥ सुव
 ॥ नृजगयद्वानिधाय ॥ ॐ सु
 ॥ यंचकं सूर्यस्य ॥ जयमानस्य
 ॥ निविदूर ॥ दयाव पादस्य
 ॥ यन थय सवन ॥ यन ॥ अ
 ॥ यदान कले ॥ यक नो ॥
 ॥ कर्ण ॥ ॥ सुव ॥ नृजग
 ॥ यद्वानिधाय ॥ कोषको ॥

यनमः॥ ॐ त्रिकायनमः॥ ॐ
 पूयनमः॥ ॥ ॐ अजिता
 यनमः॥ ॐ अयनाजितायन
 मः॥ ॐ विजयायनमः॥ ॐ
 मलायनमः॥ धूर्वादिउकुला
 न॥ ॐ धर्मोयनमः॥ ॐ
 रुद्रायनमः॥ अग्रय॥ ॐ
 क्लायनमः॥ ॐ विरुद्रायनमः॥
 नेमृत्य॥ ॐ धर्मोयनमः॥ ॐ
 सूनद्वयनमः॥ वायुय॥ ॐ
 नेमृत्योयनमः॥ ॐ धर्मोयनमः॥
 यनमः॥ ॐ ॥ ॐ धर्मो
 सनायनमः॥ ॐ अयायनमः
 ॥ धूर्वा॥ ॐ धर्मोयनमः॥ ॐ
 विजयायनमः॥ दक्षि॥
 २॥ ॐ कुंजवेनायनमः॥
 ॐ धूर्वायनमः॥ यन्त्रि
 म॥ ॐ अनेमृत्योयनमः॥ ॐ
 अमलायनमः॥ उरुवसः॥
 ॥ ॐ अनामकैयोनो
 यनमः॥ ॐ दूकानोयन
 मः॥ ॐ अनेमृत्योयनमः॥
 मः॥ ॐ धर्मोयनमः॥ ॥

मन्त्रकाष्ठयुग्म ॥ दृजनकुमन
॥ आदृतिस्वस्वमकुन ॥ १०२ ॥
वृत्तान्त ॥ ॥ जगत्किन्ना
वमालि दृत्वाकचजासाय
मुनराजदृति ॥ १०३ ॥ ॐ
स्तिनाइव ॥ ॥ आनसधि
यके ॥ वाय्वाननवान ॥ ॥
ॐ नयनदितिनिर्द्धवा ताम
नसाययासाह ॥ वासादनिर्द्ध
मदृष्टा यावेच्चन्द्रार्कगानक
। आयुकामप्रियानन्द कदि
ददि सद्यहिता । अस्मिन्ना
सदाकार्ये वासादयुक्तन
स्त्रया ॥ ॥ ॐ नोरीम्वित्त
विरुतन ॥ नेमयस ॥ ॐ रुद्र
सर्वसदारुद्र लोकानां कूट
काश्वर । आयुदाकासदाय
वी नीद्युदावसेदारुव ॥ ॐ रु
द्रानाजनिनाइता ॥ वायव्य ॥
ॐ रुद्रगुरुसदायवीतिवृत्त
स्त्रायित्तमया । निर्युज्याव
रुद्रवस्त्रामिनारुवरा नैवः
॥ ॐ यनोसमन्तना ॥ ॥

10

5



Cms.

5

10

15

20

25

3

विज्ञान १०

[illegible]

आग्नेया ॥ ॐ त्रीं त्रीं त्रीं त्रीं त्रीं
 यवलि गृह्ण २ सादा ॥ ॐ त्रीं त्रीं
 एनय यत्र वरका चिन्मद्रुचि
 नकमक १ नकि रुकामरुके
 डा द्वागस्तुवाग्नेयतम १ ॥ २ ॥
 अग्न्यादि ॥ ॥ ॥

वायुवा ॥ उं मां यौं हूं वायुवा
 वलिं नृद्रुं सादा ॥ वृं उं वायु
 यायि नृद्रुं कृद्रुं च उं हूं सादा
 वरुं सादा च उं हूं सादा

वायुदवनमामुत ॥ जगन्म
दि ॥ ३ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

कवल ॥ ॐ सांसीयुं सां कवल
यवलि गृह १ खा ३ ॥ ॐ
ले र व य र व ॥ ले यी य रु
सिधन स वे नः ॥ उरु रायति
यही दं न ज रु र्क ने मा मुत
जगन्मदि ॥ ॥ ॥

ॐ नमः ॥ ॐ हां हीं हूं ॥ ॐ नमः
नवलि गृह १ खा ३ ॥ ॐ
ॐ नमः नमः जगन्माथ ॥ पुत्र
धूल व रा द र ॥ गुक ज द
धर श्रीमान वृष सायी नमा
नमः ॥ जगन्मदि ॥ ॥ ॥

म (अस) ॥ ॐ ज ३ ज द्यो य व लि
गृह १ खा ३ ॥ ॐ उ उ उ द्यो
य व लि गृह १ खा ३ ॥ ॐ कां
की कू क ४ क गु या ला य व लि
गृह १ खा ३ ॥ जगन्मदि ॥ ॥ ॥
वद ॥ ॐ गुता र मि तु नि ॥ १० ॥
वलिया र्ग आरुति ॥ ॥ यन

मावा यो यजमान याद सा य
नरु मि वं डा व ॥ आवा यो य
ज्यो दान कल (गन) जलि य
क ॥ ॥ ॐ स्वा कि न र्क ॥
यजमान र्व द न सि द्ध र स
गुण आनी द्य वि य ॥ ॥

नवकाथ या न नमः दि आरु
दिविय ॥ ॐ ना हि र्म वि र्क ॥
दि ॥ ज य र्क ॥ ॥ ॐ व न य र्क
म (अस) मूल न आरुति ॥ ॥
स र्क ॥ ॐ या १ रु ली नी ॥ जग
धि ॥ ॐ ग आ सि ॥ ला का म धि
का ना स रु ॥ ॐ म ना दू ति ॥ प्र
ति द्वा ॥ स र्क आरुति ॥ ग आ
द ग यजमान आवा यो र्क
आरुति ॥ क र्म व लि ॥ द ग
व लि ॥ द ग य ग ना ॥ आ नि
क ॥ यो धि क ॥ य व क न्या दि
॥ दि य व र्क का द र्म ॥ वा क
ग य र्क ॥ व लि वि ग र्क न ॥
द कि र्क दान ॥ ॐ द व न्म रु
॥ य र्क ॥ आ र्म सा ॥ म गु ल

ॐ ॥ जगन्नाथ ॥ वक्र
विगर्जन ॥ वृणी नातिषक
॥ यजमान यक्रसिंहासनात्
प्रस्थासुकासनन ॥ निर्मल
नवलि ॥ कलत्र लिषक ॥
वन्दनसिंधुत्र संगुल्लिवा
य ॥ यदु ज्ञानधियुनिषा
॥ यक्रविमर्जना ॥ दूखापिखा
युजा क्राय कामात्रीयुजाया
य ॥ सूर्यनाकिथय ॥
ॐ निविषुमन्त्रयुनिषा सात्र
संप्रदयादेकायन विधिस
माय ॥ गुरुमन्त्रवर्णु ॥

१२०० नवग्रह
दिवादनी अष्टानक
दया ननुवदितसिंधु
॥ श्री ॥ श्रीसुदर्शनरा
रुथाधमकृति ॥ ॥

उधिरवाकृदिजवन्नीकादिना
जनमातिखितमिदं यदि
द्यमगुद्यममदाखानदियन ॥

रुदनमन्त्रिवाया ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥
निमययश्चुद्विद्वद्वयथागिनी ॥ चक्रनोदवदानुसप्ततलस्यन्दनकथामाल
ककलजैव आसनायक चन्दनशखदिनामधक ॥ धीव विल्वस ॥ भारनादुमा ॥
अचयिसामयमधायि ॥ भारनायकयोदुमा ॥ गुरुद ॥ जस्तिनास्त्रिधा मलाकासाधुनि
वृक्ष ॥ अवकास्त्रिधयक्षा यवानोमधमागुला ॥ अतः यदीदृषधमाद ॥ अन्निदध्यास
यश्चुक्षा वक्रायिनिक्कनाया ॥ डिनातगुग्गुल्लिना ॥ अतः यदीदृषधमाद ॥ अन्निदध्यास
द्वसश्चुक्षायायलेनासकना ॥ विरावलीकसंरुतावातसिकाविद्वरुयन ॥ ॥
ॐ निवृद्धयटलसमायः ॥ ॥ श्रीध्यावाच ॥ एकाधर्मलक्ष्मीयार्क ॥ संप्रदयादि
नकर्मनिवाद्यागिलक्ष्मसंमयकथाकनसविगणघनशाल्मीकट्टकसंलम्भा ॥

नचत्वन किं गा॥ सहा वेतसयीयस्का दुमलस्वानिलालिङ्गिगा॥ क्रानाम्भुसंविताथर्म
या॥ नयुधोजनसंविगा॥ आदित्येनभिर्मंगकाः भ्रमिलीटाचसंयगा॥ यद्रदध्नविद
ध्मयनकवध्मवयागिला॥ भग्नकवदध्मयावकल्ययावायकल्मनि॥ अत्यदकर्म
ययकाचसंयुतायाचकमचिन्तवर्द्धयत्ताययत्नेन॥ यसस्फालिङ्गकर्मणि॥ क्ल
जीलाद्रवाशय्या यध्मकङ्गद्रवागिला॥ यन्धानथाद्रवायुध्मः २८ विधवनिर्मविता॥
सुक्तीर्थेक्ष्णसंयुता॥ रुद्रध्मयोविगदिगा॥ नदीयर्थेक्ष्णसंयुतमनगटास्फामनोत्रमा॥ नि
मन्नाष्टयितानिध्मः॥ आदित्यकिन्तवध्मसिन्तनिर्दगाविस्मिर्द्धुनर्द्धनाति
नः॥ सखनायेकवध्मच॥ कर्मध्मसमनोत्रमा॥ याधकासागिलागमश्वा॥ ध्वनका

निताद्विनास्यनकनधयीता दध्वोवेवगिलागथा यस्यवर्धनययागुष्टागुद्री
यारुस्यनागुचशुवाक्रबस्यगिलास्येताजक्रागारुधयकीकिताविश्वस्यविदितायीता द
व्वासदस्यसंभन। यथानेनलयेनसम्यक स्ववर्धनययक्रयागिला॥ ॥१६॥ नमः
निवाच॥ अथगल्याद्वानगुगुनलिर्यर॥ कथयामियसंगनयनिष्टावविश्व
नरः॥ निंगविष्णुगथासूर्यो वासवायिदिगंधनी॥ यथमदयुदगयविस्थाकान
यदधः॥ अथनकनधयीन दध्ववर्धनदिकर्क॥ अथनाद्विजुनिजाया वर्धनक स कूयगा
यदिवासवबोहमी काययवदाग्रह॥ द्विजादिस्वगतमिस्यागुनकोकलियभवव
यीनवैषमिल्यर्क॥ गोददध्वनितयार॥ सर्ववसर्वजागस्या सत्याद्वानमथाद्यना
विभन॥ विभमधीच वांगुलस्वननगमह। ननगल्यविशुद्धनि सत्याद्वानमथाद्यन॥ य

रायुनानिगत्यानिगस्याययदभक्तिः ॥ निवर्द्धलक्षणासकं नायगविश्रुत
 कृष्णवनिमानवः ॥ अग्नयधनथागोमलोदनायासजायते ॥ दध्नादयचका
 धुननाउलीभायजायते ॥ एतेनजायते ॥ अर्कः ॥ ॐ बुकंतास्तिनीरदेत ॥ यतसमव
 धनयार्कः ॥ वेगनमनर्धकुरी ॥ विद्यासार्धधनयार्कः ॥ सत्यता ॥ पुनशुनयो ॥ चर्मधमक
 नर्धविद्यात् ॥ कर्णधननागनी ॥ मुक्तिकास्तिधनयार्कः ॥ यसरगनरुधनेन ॥ बालका
 यगविश्रुतः ॥ तगविद्यामहाशुखी ॥ यात्रागच्छमहागो ॥ हाटिकानिषियायवत् ॥ न
 निनायागनासैय ॥ दिवधधनवाग्रव ॥ नानावस्तुनववयालक्षणाः ॥ ॥ मुक्ति
 कार्गधमाद्याय ॥ गुणगुरुनिनयार्कः ॥ लालार्गधमहाभाग ॥ मान्मर्गधधनधना ॥ कद
 र्गधरुधकुणा ॥ विष्टर्गधचनिष्कुला ॥ मरुर्गधनियानिस्तान् ॥ इमोविष्टयमादृगत् ॥

सिद्धिनर्गधसंस्तुतसंस्तुतवनीजायता ॥ कानर्गधनथागो ॥ यानिर्गधसलवत् ॥ ॥
 नानार्गधयालक्षणा ॥ ॥ यनः ॥ स्वादवदिस्थासिस्तारागुरुतथाविदुः ॥ आस्ताविद्यितथा
 ॥ मिक्कायसिधियाजिधमा ॥ लवणनमहागो ॥ निकुनायिनिजावियः ॥ विष्टयस्वाद
 मास्वीद ॥ मन्कीगस्याविनयन ॥ ॥ सवाययालक्षणाः ॥ विष्टयकुमुसवय ॥ चवज्जद
 यनः ॥ यनाडयगनास्तिनास्ति ॥ मधुकनधनागमेश ॥ यिद्यलीकारुवसाका ॥ मृकना
 धान्यद्वय ॥ ॥ ईदनीमहानागो ॥ अर्धधनवान्देत ॥ सलेर्गयागतायाकी ॥ यत
 गनमहायय ॥ ॥ दिङ्गिकाकामहागो ॥ विष्टिकमनर्धकुरी ॥ गृहगमधोमहासिद्धिद
 कलार्गययनागन ॥ ॥ उवमादिनिउमृता ॥ गुननगुरुदायवत् ॥ ॥ अशुननागुरुविद्यान

ईशुनांचविशेषः॥ अस्तिनांचरयेत्त एमस्तिनांचरयेत्त ॥ अस्तिनांचरयेत्त ॥ अस्तिनांचरयेत्त ॥
 यान्द्रुधः॥ यद्वत्तसि यसाधान्द्रुधः॥ यद्वत्तसि यसाधान्द्रुधः॥ यद्वत्तसि यसाधान्द्रुधः॥
 रानकागिहिकाष्टकं॥ रानकागिहिकाष्टकं॥ रानकागिहिकाष्टकं॥ रानकागिहिकाष्टकं॥
 आसीविगएएएसमदा॥ दीयाद्रुधः॥ दीयाद्रुधः॥ दीयाद्रुधः॥ दीयाद्रुधः॥
 दिर्गसदर्थयुवादिवायुर्कं॥ युवद्वद्वमि एर्कं॥ दक्षिणंमसनेनथा॥ यस्मिभनामयाभा
 तिमीरुनयायद्रुधः॥ अत्रमिदधन्धेय॥ दृष्टकं॥ मिथुनात्तुयुक्मुदि
 कर्कटाकीनर्कं॥ नर्वयुजादिमासादि कर्मनयादि किं॥ नासिनोमानिद्वादम्
 लिखत्युवादिनर्कं॥ आयर्तचक्रदृष्टं॥ यद्द्वर्तयुवमालिखन्॥ चनसुविषमवाक्य

[illegible]

५ न ५५
नीयादास्यां च निवर्था के ॥ वासमदक्षिणमिष्येव वा मुकुतनदीविनशा ॥ बहु निमग्नयेव वि
कृतस्य रूलेमादृशेन ॥ आयातसिद्धयमर्द्धी च शुभसंधनो गम ॥ रुद्रासनकृताथर्व
वृत्तयष्टिविधनी ॥ चक्रदाविदुमियाद्रु ॥ काविषमवाद्रुके ॥ नृयासीनकि काननि
सकटचधनक्षया ॥ नृशमियसथाद्रु ॥ यथावा लाचक्रय ॥ मृजङ्गमयनेराया
मर्थना ॥ रुद्रस्य र्वी ॥ यजुनेष्टुक्तिनार्गव ॥ कर्मवर्धनयीतिगः ॥ वायव्योन ॥ रुद्र
विद्याग ॥ सयधन्यधिनाशने ॥ पाण्डुसवा मुमियाद्रु ॥ खनितव्युलाशुतः ॥ दवव
मयतेमन्ति ॥ दावा नादेवामुघः ॥ नाग कर्मवर्धनं ॥ यक्ष कर्मक्षिति द्वावि
शाल्वे मधुनवा स्वादिष्टुजयत निवमादिके ॥ नृवैद्यमियमाधात्कि ॥ कानयद्यविच

[illegible]

खेस्येष्टाद्रुतिमाददत्त। वलिवदाययत्तुर्ध्वं यूजयस्तिष्ठकः॥ गगः॥ कूदानयाम्
 मनुजेयूजयत्तुमधुनी॥ वामुकक्रीगयत्तुस्वनिता। मुरुकल्याणसूक्ष्म। यनयः
 गुणत्रीगमृस्वनितागम्यतस्तका॥ दृदिदानयत्तुयेव तुजयामनुनस्तथा। नवमशु
 रसंजातयजमानाचार्ययादुर्ग। नियनेकापयस्तति। कल्याणोर्ध्वगोदृती। ससा
 दितसमादृत्वायनितवामुकदुर्ग। संवासरुवाधुनी। युकापनागवामुकी। नावि
 केयस्तेन्यादो। वायीकृयतदागथाः॥ काश्चिगेतः॥ तथैवेवकादध्वानिकापयत्त॥ गगम
 (ध्व)शुक्लुलाकापयत्त॥ निममीशग॥ यद्वनेस्त्वलागुत्तु। स्वनितयावचान्ने। यद्व
 निष्ठाधनागमयावामुनाथसुखत। नकागातिपदकाश्च॥ मीगनेस्त्वदधुकी॥ अन्ने

आरुथेस्त्वव। यितथेववा॥ गीगिनस्तथायद्वीमधुलाकालवामुग॥ काश्च
 दवतायद्वीमाधवक्रापययत्त॥ द्वादशयनकाश्चानिकाश्चकाष्टवदयता॥ रादायदादि
 द्यथा। मासिमासिगयी॥ दिगमनीमीशमादीनोचलनेचविधायग॥ कन्यादिर्मकुर्मसूत्वादिग
 दीनीकभानगः॥ उलामिधनयद्वीदि। नाशिनीकार्लिकागथा। नवैकुमनसेयाग। मार्गगाध
 क्रयोषकी॥ माद्यमासान्कैवेक। धनमनर्कुरग। मीनमघट्टघोवेवराजवैगभववावे
 ग्भाघान्ककुर्मसूत्वायश्चिमादिष्टवाकमी। मिधनककूटसिंदी। जग्राघारमवर्ही। नवीकुर्मप
 यधन। नागानीवामुसेकमी। गयगया। इयिमासानि। चउस्त्वयदिगभकुर्म॥ स्वयिर्गवामयाग
 क॥ दिउर्जनवति॥ रुष्मा॥ नकागाकाष्टयीगमनी। वायकं। नागवामुसः॥ स्वनिर्गववामा

एतन्निपुनीकानयत्सधधी॥ नवनागस्यवास्तुनिउल्लकार्यविगघनः॥ विगघानानि काकर्म
 मध्यवक्रासुयुञ्जत॥ अर्थमायुर्वेगाक्रेयासाविगीवाग्रीगावयविवधानन्दकि॥ नकुर्ग
 नुयवचनेस्पति॥ मेणययिममास्त्यनददासचवायवायुधिवेचसोम्यायोआयवद्धु
 गा॥ उययुर्वीरास्तेनाहुवर्गसत्येवेवदितीथक॥ ययस्तुयकोसुयुवृन्निद्रवहुयर्क॥ पु
 षयवकमयाञ्जकिणथवृभभवचसफर्मगुरुक्रमश्चयमवास्तुमथयग॥ गंधर्वनवर्मय
 कौचर्मदशमउचगालेगनाटनकादर्गविद्यातयिरुचद्वादशस्मृत॥ दोवाविकगयादस्या
 मयावेवचउद्दर्ग॥ यैवदगयवादर्नउल्लधियैवेवयाउर्ग॥ मामिवसफदर्गसोखीवेवावासा
 दगा॥ नवदगमानवर्कसोर्क॥ विगनिनिगयग॥ नकविगनिवायतिद्याविगगोखवावर्क॥ ए

याविगनिनागनीमस्त्वोवचउद्दिगगा॥ यैवविगनिखत्वाटषउविगसमभवच॥ एफ
 विगनिचानकहिलिञ्जवाष्टविगर्क॥ नवकाष्टयुयुजीत॥ नागनीवास्तुमयत॥ सिरानक
 न्यामादीनीछादर्गकमवधत॥ सिरुदगद्याविथार्क॥ केचवविगनिस्मृत॥ तुल्लुल्लनलाया
 निविगनिवाटिनयत॥ विद्रुविगनिमियादुधनोवेवाष्टविगर्क॥ मकनविगनिथार्क
 दीरुत्यवीरताशोरवतामीनविगनिसेथार्क॥ भवतुल्लकर्मविद॥ एवचविगर्कथार्क॥ मिथनव
 दग्गाधिक॥ कर्कटविगनियार्क॥ कभनकुलयतविद॥ नवयनागवास्तुनी॥ यगनयेववास्तुवः॥
 उल्लयुक्षामसंचालेययसास्वनमक्रनी॥ यियुगुस्वननिलेयादर्गसोमगर्कगर्ले॥ नागकुगप
 सेयुर्क॥ कीलानेवबलिददत्त॥ अस्तुनाष्टेववास्तुनी॥ सोमावेवास्तुनेकर्म॥ नवमादी१८

नकर्मोदिकापथस्त्रियकृतीयादवानकदाध्यानिवाद्दोषनथाविधिः॥युतिमुद
मिषाद्यन्तेन्यस्येदवादिनागग॥यायितंघुऊऊर्णंनययथादागोयुद्दयेन॥ ॥ॐनिनि

श्लेषाद्यन्तैर्न्यस्येदवादिनागग॥ नायिर्गधुज्जुष्टं च यथादाग्नौ यद्गुयत ॥ ॥ वृत्तिनिब
 द्धानो ध्वजमलागकुलमिह ॥ धनबासुस्ययनविधिः ॥ ॥ रत्नलिकाशार्दन

॥ विप्रश्नानि विप्रश्नानि विप्रश्नानि ॥

॥ वृत्तिकाश्रय

याविधिना॥ अचमन॥ डैअथादि॥ डैसाहाधिकानेति॥ डैसिद्धिनमुक्ति
 या॥ यऊमानस्यविष्णुयासाधायविचूलिकाशरुननिमित्थार्थ॥ लेखमानयंत्रमु
 न॥ धनस्थिरस्वधिन॥ यागनयासमंक॥ यचसूक्तानयिन॥ ऊजमस्वानेत॥ दव
 यामनुनन्यासयादवउत्तार्थ॥ याणयूऊ॥ आसनग॥ ॥ डैआधादि॥ डैगवजसना
 य२॥ ययाऊलि॥ य३॥ यगनस्वानर्गन॥ यदार्जन॥ डैईऊग॥ १२ ॥ डैसक्रिन॥ डैदुति॥

॥ धृयदीयजायसीश ॥ ॐ यो सो क्री नाम्भूम ध्याति ॥ नृगर्ग प्रादि ॥ ॥ धनकल
मिहाययुजायाया ॐ विष्णु कर्मोदां द मासनी ॥ ॥ रुस्मादी यगे सिधु ऊजम स्तान
धय दीय स्तोत्र याय केतम ॥ कलप्रियागै दक्षिणा विया ॥ यात्ननवासनकाव यासा
दसर्धगतयेन ॥ नवकाथमस्लेखनरायाव चंदनादिनयुजायाय वीहि लंडाकायद्र
गावृत्तिकार्ग ॥ धेजार्धधयत ॥ स्मिन्नहाय यजमानकनमिनधिस्वर्ग ॥ अश्रवाला
रु X ॐ अद्यादि ॥ ॐ वृत्तिके त्वं मरुग्म नडुद्ध निर्निगह निस्वयी ॥ यासादाद्ध स्मिर्नदवं ह्नु
नत्रयनमाभुत ॥ नाशुग्म निजयीनाजा सखिनश्चयजासुधा ॥ स्वकृत्नेष्टद्विजानित्य सु
रिक्कानाग्यमववा यथाविष्टुस्मभनृलियथा वृत्तिकुक्षरु निः ॥ विष्टु वृत्तिमर्मयधर्म सर्व

१॥ सुवर्णसहित नाम पूजा
 विधिः ॥ स्नान कल ग म
 उ ५ दय के पूजा या या ॥
 दव पु ति का या स्नान विधि ॥
 पूजा उषधी सहित य म
 तनी धर्तु रव ग म ज ल मा
 ल ॥ निम्न कुना दि विधि ॥
 ॥ क ॥ ॥ नाम ॥ म धन ॥
 शित व य म ग ल म ल म
 नु ५ उ य न य ॥ पूजा
 या य व द न ॥ व न ना दि
 पूजा ॥ उ त ला या मी ति
 दाना र्चन ॥ द व या वि ॥
 व व द व उ ४ स सि पू य
 दी य पु ति र्चन ॥ ज य म
 ॥ अ ग ग म्मा दि ॥ वि श्व क
 मा पूजा ॥ ह्ना य ॥ अ गी र्वा
 द वि य ॥ र्ते ति सि ज न पूजा ॥

गगा ४ ग श लि या नि ड ल पूजा ॥
 क ल न पूजा वि धि ॥ न व
 य २ २ य उ गा १ थ न व लि
 ल र व व लि या त १ स्नान क
 ल ग य उ ४ य म्मा मृत य म्मा
 ग या क र वा य डी व धी
 मृ ति का र म्मा उ दि रु
 ल ग म्मा ज ल स्नान मि
 ज ल ल दि ग य ता य व
 ग न म नु स्नान म्मा ला व
 न थी र व ल अ रु लि व क
 य न न कू क म्मा ध न न र्च
 म नु वा य पूजा न म रु ल
 जा १ ॥ आ न थि च न य ति
 ॥ वि श्व क मा पूजा ह्ना य
 ॥ वा म्मा दि पूजा न ॥ अ
 लि श्व क म रु ल दि ॥ र्ते
 ति मि ज ल पूजा ॥ ॥





25

15

10

5

0

cms.

5

10

15

20

25

30



४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७
४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५
५६	५७	५८	५९	६०	६१	६२	६३
६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१
७२	७३	७४	७५	७६	७७	७८	७९
८०	८१	८२	८३	८४	८५	८६	८७
८८	८९	९०	९१	९२	९३	९४	९५
९६	९७	९८	९९	१००	१०१	१०२	१०३
१०४	१०५	१०६	१०७	१०८	१०९	११०	१११
११२	११३	११४	११५	११६	११७	११८	११९
१२०	१२१	१२२	१२३	१२४	१२५	१२६	१२७
१२८	१२९	१३०	१३१	१३२	१३३	१३४	१३५
१३६	१३७	१३८	१३९	१४०	१४१	१४२	१४३
१४४	१४५	१४६	१४७	१४८	१४९	१५०	१५१
१५२	१५३	१५४	१५५	१५६	१५७	१५८	१५९
१६०	१६१	१६२	१६३	१६४	१६५	१६६	१६७
१६८	१६९	१७०	१७१	१७२	१७३	१७४	१७५
१७६	१७७	१७८	१७९	१८०	१८१	१८२	१८३
१८४	१८५	१८६	१८७	१८८	१८९	१९०	१९१
१९२	१९३	१९४	१९५	१९६	१९७	१९८	१९९
२००	२०१	२०२	२०३	२०४	२०५	२०६	२०७
२०८	२०९	२१०	२११	२१२	२१३	२१४	२१५
२१६	२१७	२१८	२१९	२२०	२२१	२२२	२२३
२२४	२२५	२२६	२२७	२२८	२२९	२३०	२३१
२३२	२३३	२३४	२३५	२३६	२३७	२३८	२३९
२४०	२४१	२४२	२४३	२४४	२४५	२४६	२४७
२४८	२४९	२५०	२५१	२५२	२५३	२५४	२५५
२५६	२५७	२५८	२५९	२६०	२६१	२६२	२६३
२६४	२६५	२६६	२६७	२६८	२६९	२७०	२७१
२७२	२७३	२७४	२७५	२७६	२७७	२७८	२७९
२८०	२८१	२८२	२८३	२८४	२८५	२८६	२८७
२८८	२८९	२९०	२९१	२९२	२९३	२९४	२९५
२९६	२९७	२९८	२९९	३००	३०१	३०२	३०३
३०४	३०५	३०६	३०७	३०८	३०९	३१०	३११
३१२	३१३	३१४	३१५	३१६	३१७	३१८	३१९
३२०	३२१	३२२	३२३	३२४	३२५	३२६	३२७
३२८	३२९	३३०	३३१	३३२	३३३	३३४	३३५
३३६	३३७	३३८	३३९	३४०	३४१	३४२	३४३
३४४	३४५	३४६	३४७	३४८	३४९	३५०	३५१
३५२	३५३	३५४	३५५	३५६	३५७	३५८	३५९
३६०	३६१	३६२	३६३	३६४	३६५	३६६	

